परमात्म ऊर्जा

सदैव जो कोई भी कर्त्तव्य करते हो व मुख से शब्द वर्णन करते हो तो पहले चेक करो कि रहम और रूहाब- दोनों समान रूप में हैं? दोनों को समान करने से एक तो अपना स्वमान स्वयं रख सकेंगे, दूसरा सर्व आत्माओं से भी स्वमान की प्राप्ति होगी। स्वमान को छोड़ मान की इच्छा रखने से सफलता नहीं हो पाती है। मान की इच्छा को छोड़ स्वमान में टिक जाओ तो मान परछाई के समान आपके पिछाड़ी में आयेगा। जैसे भक्त अपने देवताओं व देवियों के पीछे अन्धश्रद्धा वश भी कितनी भागदौड़ करते हैं। वैसे चैतन्य स्वरूप में स्थित हुई आत्माओं के पीछे सर्व आत्माएं मान देने के लिए आयेंगी, दौड़ेंगी। भक्तों की भागदौड़ देखी है? आप लोगों के यादगार जड़ चित्र हैं। उनमें भी चित्रकार मुख्य यही धारणा भरते हैं- एक तरफ शक्तियों का रूहाब भी फुल फोर्स में दिखाते हैं और साथ-साथ रहम का भी दिखाते हैं। एक ही चित्र में दोनों ही भाव प्रकट करते हैं ना! यह क्यों बना है? क्योंकि प्रैक्टिकल में आप रूहाब और रहमदिल मूर्त बने हो। तो जड़ चित्रों में भी यही मुख्य धारणाएं दिखाते हैं। तो आप लोग अभी जब सर्विस पर हो तो सर्विस के प्रत्यक्षफल का आधार इन दो मुख्य धारणाओं के ऊपर है। रहमदिल ज़रूर बनना है, लेकिन किस आधार पर और कब? यह भी देखना है। रूहाब रखना ज़रूर है, लेकिन कैसे और किस तरीके से प्रत्यक्ष करना है, यह भी देखना है। रूहाब कोई वर्णन करने व दिखाने से दिखाई नहीं देता, रूहाब नैन-चैन से स्वयं ही अपना साक्षात्कार कराता है। अगर उसका वर्णन करते हैं तो रूहाब बदलकर रोब में दिखाई देता है। तो रोब नहीं दिखाना है, रूहाब में रहना है।

रोब को भी अहंकार व क्रोध की वशांवली कहेंगे। इसलिए रोब नहीं दिखाना है,लेकिन रूहाब में ज़रूर रहना है। जितना-जितना रहमदिल के साथ रूहाब में रहेंगे तो फिर रोब खत्म हो ही जायेगा। कोई कैसी भी आत्मा हो, रोब दिलाने वाला भी हो, तो रूहाब और रहमदिल बनने से रोब में कभी नहीं आयेंगे। ऐसे नहीं कि सरकमस्टान्सेज़ ऐसे थे व ऐसे शब्द बोले तो यह करना ही पड़ा। करना ही पड़ेगा, यह तो होगा ही, अभी तो सम्पूर्ण बने ही नहीं हैं- यह शब्द अथवा भाषा इस संगठन में नहीं होनी चाहिए। क्योंकि आप निमित्त सर्विस के हो इसलिए इस संगठन को मास्टर नॉलेजफुल और सर्विसएबुल, सक्सेसफुल संगठन कहेंगे। जो सक्सेसफुल हैं वह कोई कारण नहीं बनाते। वह कारण को निवारण में परिवर्तन कर देते हैं। कारण को आगे नहीं रखेंगे। जो मास्टर नॉलेजफुल, सक्सेसफुल होते हैं वह अपनी नॉलेज की शक्ति से कारण को निवारण में बदली कर देंगे, फिर कारण खत्म हो जायेगा। निमित्त बनने वालों को विशेष अपने हर संकल्प के ऊपर भी अटेन्शन रखना पड़े। क्योंकि निमित्त बनी हुई आत्माओं के ऊपर ही सभी की नज़र होती है। अगर निमित्त बने हुए ही ऐसे-ऐसे कारण कहते चलते तो दूसरे जो आपको देख आगे बढ़ते हैं, वह आप को क्या उत्तर देंगे? इस कारण से हम आ नहीं सकते, चल नहीं सकते। जब स्वयं ही कारण बताने वाले हैं तो दूसरे के कारण को निवारण कैसे करेंगे? क्योंकि लोग सभी जानने वाले हो गये हैं। जैसे यहाँ दिन-प्रतिदिन नॉलेजफुल बनते जाते हो, वैसे ही दुनिया के लोग भी विज्ञान की शक्ति से, विज्ञान की रीति से नॉलेजफुल होते जाते हैं। वह आप लोगों के संकल्पों को भी मस्तक से, नयनों से, चेहरे से चेक कर लेते हैं। जैसे यहाँ ज्ञान की शक्ति भरती जाती है, वहाँ भी विज्ञान की शक्ति कम नहीं है। दोनों का फोर्स है। अगर निमित्त बनने वालों में कोई कमी है तो वह छिप नहीं सकते। इसलिए तुम निमित्त बनी हुई आत्माओं को इतना ही विशेष अपने संकल्प, वाणी और कर्म के ऊपर अटेन्शन रखना पड़े।

कथा सरिता

ईमानदारी ही सर्वश्रेष्ठ कमाई है

एक राहुल नाम का व्यक्ति था। स्वभाव से बहुत ही गंभीर था। उसकी पढ़ाई पूरी हो चुकी थी,लेकिन कोई नौकरी नहीं थी। दिन-रात वो काम की तलाश में इधर-उधर भटकता रहता था। राहुल एक ईमानदार मनुष्य भी था इसलिए भी उसे काम मिलने में मुश्किल आ रही थी। दिन इतने खराब हो चुके थे कि उसे मजदूरी करनी पड़ी। रोजी रोटी के लिए उसके पास अब कोई विकल्प नहीं था। राहुल पढ़ा लिखा था जो उसके व्यवहार से साफ जाहिर होता था।

एक दिन एक सेठ के घर राहुल मजदूरी कर रहा था। सेठ का ध्यान राहुल के ऊपर ही था। सेठ को समझ आ रहा था कि राहुल एक पढ़ा-लिखा समझदार लड़का है, लेकिन परिस्थिति वश उसे ऐसे मजदूरी का काम करना पड़ रहा है। सेठ को अपने एक विशेष काम के लिए एक ईमानदार व्यक्ति की ज़रूरत थी। उसने राहुल की परीक्षा लेने की सोची।

उसने एक दिन राहुल को अपने पास बुलाया और उसे पचास हज़ार रूपये दिए जिसमें सो-सो के नोट थे और कहा भाई तुम ईमानदार लगते हो ये पैसे मेरे एक व्यापारी को दे आओ। राहुल ने ईमानदारी से पैसे पहुँचा दिए।

दूसरे दिन, व्यापारी ने राहुल को फिर से पैसे दिए इस बार उसने राहुल को बिना गिने पैसे दिए कहा खुद ही गिन लो और व्यापारी को दे आओ। राहुल ने ईमानदारी से काम किया।

सेठ पहले से ही गल्ले में पैसे गिनकर रखता था पर वो राहुल की ईमानदारी की परीक्षा लेना चाहता था। रोज़ वो सेठ उसे पैसे देने भेजता था। राहुल की माली हालत तो बहुत ही खराब थी। एक दिन उसकी नियत डोल गयी और उसने सो रूपये चुरा लिए। जिसका पता सेठ को लग गया पर सेठ ने कुछ नहीं कहा। फिर से राहुल को रूपये देने भेजा। सेठ के कुछ न कहने पर राहुल की हिम्मत बढ़ गयी। उसने रोज़ाना चोरी करनी शुरू कर दी।

सेठ को उम्मीद थी कि राहुल उसे सच बोलेगा लेकिन राहुल ने नहीं बोला। एक दिन सेठ ने राहुल को काम से निकाल दिया। वास्तव में सेठ अपने जीवन का एक सहारा ढूंढ रहा था। उसकी कोई संतान नहीं थी। राहुल को भोला-भाला जानकर उसने उसकी परीक्षा लेने की सोची थी। अगर राहुल सच बोलता तो सेठ उसे अपनी दुकान सौंप देता।

जब राहुल को इस बात का पता चला है तो उसे बहुत दुःख हुआ और उसने स्वीकारा कि कैसी भी परिस्थिति हो ईमानदारी ही सर्वोच्च नीति होती है।

शिक्षा: कैसा भी मुकाम आये व्यक्ति को लेकिन ईमानदारी का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। ईमानदारी जीवन की वो कमाई है जो मुश्किल है लेकिन कभी गलत अंत नहीं देती।

चरित्र का विकास बाल्यकाल से ही होता है

एक महान व्यक्ति थे ईश्वर चन्द्र। उनके जीवन में उनकी माता का बहुत बड़ा योगदान था। जब वे छोटे थे तब उनके घर के पास एक व्यक्ति बहुत गंभीर हालत में पड़ा हुआ था। उसके पास ना खाने को पैसा था न ही अपने इलाज के लिए कुछ था। उस वक्त ईश्वर के पास उस गरीब की सहायता हेतु कुछ नहीं था। वे दौड़ कर अपनी माँ के पास गये,लेकिन माँ के पास भी इलाज के लिए देने को कुछ नहीं था। तब माँ ने अपने आभूषण निकाल पुत्र के हाथों में रखे और कहा बेटा इन्हें बेचकर उस रोगी की मदद करो। तब पुत्र ने कहा, माँ ये आभूषण तो तुम्हारी माँ ने दिए थे। ये तुम पर बहुत अच्छे भी लगते हैं और तुम्हें प्रिय भी हैं। तब ईश्वर की माँ ने उसे समझाया, यह आभूषण देह की शोभा बढ़ाते हैं लेकिन किसी ज़रूरतमंद के लिए किया गया कार्य, मन और आत्मा की शोभा बढ़ाता है। तू ये आभूषण ले जा एवं उस रोगी का उपचार कर। जब तू बड़ा होगा तब मुझे यह आभूषण बनवा देना।

कई सालों बाद, जब ईश्वर अपनी पहली कमाई लाया तब उसने अपने माँ के आभूषण बनवा दिए और कहा- माँ आज तेरा कर्ज पूरा हुआ। तब माँ ने कहा बेटा मेरा कर्ज जब पूरा होगा तब मुझे किसी ज़रूरतमंद के लिए आभूषण नहीं देने होंगे,संसार के सभी लोग संपन्न होंगे। तब ईश्वर ने अपनी माँ को वचन दिया, माँ अब से मेरा पूरा जीवन ज़रूरतमंदों के लिए समर्पित होगा। तब से ही ईश्वर ने अपना सम्पूर्ण जीवन दीन-दुखियों के लिए समर्पित किया और उनके कष्ट कम करने में बिता दिया।

शिक्षा: चरित्र का विकास बाल्यकाल की शिक्षा से ही होने लगता है। अतः सदैव अपने बच्चों को सही-गलत का पाठ सिखायें। जो वे बचपन में सीखते हैं उसी से उनका भविष्य बनता है।

सादाबाद-उ.प्र.। खुदा का पैगाम आपके लिए 'दया एवं करूणा से जन्नत की ओर' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए इमाम हाफिज मोहम्मद नजर जी, हाफिज मोहम्मद जाविद, कवि नूर, मोहम्मद नूर, डॉ.ज्वाला सिंह, कवि जयप्रकाश पचौरी, अंजान खान, राजीव शर्मा सरस्वती शिशु मंदिर, भरतपुर से आगरा सह क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. कविता दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. भावना दीदी, दाऊजी से ब्र.कु.सीमा बहन, ब्र.कु.बबिता बहन तथा ब्र.कु.मिथलेश बहन।